जर्मनी की लोक कथाऐं

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Germany Ki Lok Kathyen (Folktales of Germany)
Cover Page picture: Berlin Wall
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Germany

विंडसर, कैनेडा

मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

जर्मनी की लोक कथाऐं 5

एक समय था जब इंगलैंड के राज्य में सूरज नहीं डूबता था। इतना बड़ा था उसका राज्य। सारी दुनियॉ में उसकी कोलोनीज़ फैली पड़ी थीं। अब क्योंकि बहुत सारे देश उसकी कोलोनीज़ थीं तो उन सब देशों में अंग्रेज़ी पढ़ायी जाती थी और उनका साहित्य पढ़ाया जाता था। कहानियों में उनकी लोक कथाऐं और उनकी कविताऐं पढ़ायी जाती थीं। 5

शुरू शुरू में यूरोप की लोक कथाओं का एक संग्रह ग्रिम ब्रदर्स ने छापा था। इस संग्रह में अधिकतर इंगलैंड जर्मनी फ्रांस आदि देशों की लोक कथाऐं थीं। सो उस समय अंग्रेज़ों की कोलोनीज़ के बच्चों को यही कथाऐं पढ़ायी जाती थीं हालॉकि बाद में फिर और भी संग्रह प्रकाशित हुए। पर फिर तब तक क्योंकि उनकी वे कोलोनीज़ आज़ाद होने लगी थीं उस साहित्य का असर उन देशों से हटता चला गया और उनकी जगह उनके अपने साहित्य ने ले ली। पर फिर भी अभी भी जहॉ उनकी तरह के स्कूल चल रहे हैं वहॉ अभी भी उन्हीं की लोक कथाऐं और कविताऐं पढ़ायी और सिखायी जाती हैं। 5

हालॉकि अब इस प्रकार के स्कूल बहुत कम हो गये हैं और उनका स्थान स्थानीय स्कूलों ने ले लिया है फिर भी अंग्रेजी एक ऐसी भाषा है जो इंगलैंड की कोलोनीज़ वाले और अमेरिका आने वाले बच्चे जरूर ही सीखते हैं। इसके लिये उनको उन अंग्रेजी स्कूलों में जाना पड़ता है और वहॉ की इन लोक कथाओं और कविताओं को भी पढ़ना होता है। अब हर बच्चा तो देश से बाहर जाता नहीं तो वह स्थानीय स्कूलों में पढ़ता है पर वह इन लोक कथाओं और कविताओं को पढ़ने से वंचित रह जाता है। 5

इस तरह से बच्चों के दो समूह बन जाते हैं। एक तो ऐसे बच्चें का समूह जो अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ता है और यूरोप का साहित्य पढ़ता है। दूसरा उन बच्चों का समूह जो स्थानीय स्कूलों में पढ़ता है और वहॉ के साहित्य से वंचित रह जाता है। ऐसे ही बच्चों और लोगों के लिये हम यूरोप के देशों की कुछ लोक कथाऐं प्रकाशित कर रहे हैं। 5

"ब्रिटेन की लोक कथाऐं-1", "ब्रिटेन की लोक कथाऐं-2", यूरोप की लोक कथाऐं-1" आदि आदि। इस पुस्तक में हम जर्मनी की कुछ मिली जुली लोक कथाऐं दे रहे हैं। 5

आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम सबको और लोक कथाओं की तरह से बहुत पसन्द आयेंगी और जर्मनी के बारे में कुछ जानकारी देंगी। 5

1 मेंढक राजकुमार 7

2 मेंढक और राजकुमारी 16

3 बीन्स एक तरफ से फटी हुई क्यों 22

4 दलिये का बरतन 27

5 इच्छाऐं पूरी करने वाली खाल 33

6 बतख लड़की 43

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

जर्मनी की लोक कथाऐं

एक समय था जब इंगलैंड के राज्य में सूरज नहीं डूबता था। इतना बड़ा था उसका राज्य। सारी दुनियॉ में उसकी कोलोनीज़ फैली पड़ी थीं। अब क्योंकि बहुत सारे देश उसकी कोलोनीज़ थीं तो उन सब देशों में अंग्रेज़ी पढ़ायी जाती थी और उनका साहित्य पढ़ाया जाता था। कहानियों में उनकी लोक कथाऐं और साहित्य में उनकी कविताऐं पढ़ायी जाती थीं।

शुरू शुरू में यूरोप की लोक कथाओं का एक संग्रह ग्रिम ब्रदर्स ने प्रकाशित किया था। इस संग्रह में अधिकतर इंगलैंड जर्मनी फ्रांस आदि देशों की लोक कथाऐं थीं। सो उस समय अंग्रेज़ों की कोलोनीज़ के बच्चों को यही कथाऐं पढ़ायी जाती थीं हालॉकि बाद में फिर और भी संग्रह प्रकाशित हुए। पर फिर तब तक क्योंकि उनकी वे कोलोनीज़ आज़ाद होने लगी थीं उस साहित्य का असर उन देशों से हटता चला गया और उनकी जगह उनके अपने साहित्य ने ले ली। पर फिर भी अभी भी जहॉ उनकी तरह के स्कूल चल रहे हैं वहॉ अभी भी उन्हीं की लोक कथाऐं और कविताऐं पढ़ायी और सिखायी जाती हैं।

हालॉकि अब इस प्रकार के स्कूल बहुत कम हो गये हैं और उनका स्थान स्थानीय स्कूलों ने ले लिया है फिर भी अंग्रेजी एक ऐसी भाषा है जो इंगलैंड की कोलोनीज़ वाले और अमेरिका आने वाले बच्चे जरूर ही सीखते हैं। इसके लिये उनको उन अंग्रेजी स्कूलों में जाना पड़ता है और वहॉ की इन लोक कथाओं और कविताओं को भी पढ़ना होता है। अब हर बच्चा तो देश से बाहर जाता नहीं तो वह स्थानीय स्कूलों में पढ़ता है इसलिये वह इन लोक कथाओं और कविताओं को पढ़ने से वंचित रह जाता है।

इस तरह से बच्चों के दो समूह बन जाते हैं। एक तो ऐसे बच्चें का समूह जो अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ता है और यूरोप का साहित्य पढ़ता है। दूसरा उन बच्चों का समूह जो स्थानीय स्कूलों में पढ़ता है और वहॉ के साहित्य से वंचित रह जाता है। ऐसे ही बच्चों और लोगों के लिये हम यूरोप के देशों की कुछ लोक कथाऐं प्रकाशित कर रहे हैं।

"ब्रिटेन की लोक कथाऐं-1", "ब्रिटेन की लोक कथाऐं-2", "यूरोप की लोक कथाऐं-1", "जियोर्जिया की लोक कथाऐं", "इटली की लोक कथाऐं" आदि आदि। इस पुस्तक में हम जर्मनी की कुछ लोक कथाऐं दे रहे हैं।

आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम सबको और लोक कथाओं की तरह से बहुत पसन्द आयेंगी और जर्मनी के बारे में कुछ जानकारी देंगी।

1 मेंढक राजकुमार[1]

जर्मनी की यह सबसे पहली कहानी हमने तुम्हारे लिये वहॉ की एक बहुत ही लोकप्रिय कहानी चुनी है। अगर तुमने यह कहानी पढ़ी नहीं होगी तो कम से कम सुनी जरूर होगी।

एक बार की बात है कि एक राज्य में एक बहुत ही सुन्दर राजकुमारी रहती थी। वह एक बहुत बड़े महल में रहती थी जिसमें बहुत सारे फव्वारे और बागीचे थे।

राजकुमारी को बागीचों में घूमना बहुत अच्छा लगता था सो वह अपने महल के बागीचों में घूमती रहती और वहॉ बहुत देर तक पेड़ पौधों को देखती रहती। जब वह फव्वारे के पास बैठती तो उसमें वह अपनी परछाईं देखती रहती।

वह हमेशा से ही बहुत अच्छी नहीं थी इसी लिये उसके साथ खेलने के लिये उसका कोई दोस्त नहीं था। जब वह बाहर खेलती तो बस वह एक सुनहरी गेंद से ही खेलती। वह उसको हवा में उछाल उछाल कर खेलती रहती।

एक बार जब वह राजकुमारी अपनी गेंद को उछाल उछाल कर खेल रही थी तो उसकी गेंद एक कुॅए में गिर गयी। उसने जब कुॅए

[1] The Frog Prince – a folktale from Germany, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=66
Adapted from the “Brothers Grimm”.

में झॉक कर देखा तो उसे केवल अपनी परछाईं ही दिखायी दी गेंद नहीं दिखायी दी।

ऐसा पहली बार हुआ था जब उसको अपनी परछाईं देखना अच्छा नहीं लगा। उसने रोना शुरू कर दिया।

एक कोमल आवाज ने पूछा — "राजकुमारी, तुम क्यों रोती हो?" राजकुमारी ने अपने चारों तरफ देखा पर उसे अपने पास तो कोई भी दिखायी नहीं दिया।

उसने पूछा — "यह कौन बोला मुझसे?"

फिर उसने नीचे झुक कर देखा तो देखा कि एक मेंढक उसके पैरों के पास बैठा था। उसके मुॅह से निकला — "उॅह, एक गन्दा बूढ़ा मेंढक।"

मेंढक बोला — "राजकुमारी जी पहली बात तो यह कि मुझे नहीं लगता कि मैं गन्दा हूॅ। और दूसरी बात यह कि मैं बूढ़ा भी नहीं हूॅ। और तीसरी बात यह कि मैंने पूछा कि तुम क्यों रो रही हो?"

राजकुमारी बोली — "मेरी गेंद इस कुॅए में गिर गयी है। अगर तुम इस कुॅए में से मेरी गेंद निकाल दोगे तो मैं तुमको अपने मोती और जवाहरात दे दूॅगी।"

मेंढक बोला — "मैं तुम्हारी गेंद निकाल तो सकता हूॅ पर मुझे तुम्हारे मोती और जवाहरात नहीं चाहिये। मैं तुम्हारे घर में आना चाहता हूॅ। मैं तुम्हारी मेज पर तुम्हारे साथ खाना खाना चाहता हूॅ

तुम्हारी सुन्दर सोने की थाली में से। और फिर मैं तुम्हारे बिस्तर पर सोना चाहता हूँ।"

राजकुमारी ने कुछ बुरा सा मुँह बनाया तो मेंढक फिर बोला — "हाँ और मैं यह भी चाहता हूँ कि तुम मेरा चुम्बन लो। वायदा करो कि तुम यह सब करोगी तभी मैं तुम्हारी सुनहरी गेंद निकाल कर तुमको दूँगा।

राजकुमारी बोली — "ठीक है मैं वायदा करती हूँ कि मैं यह सब करूँगी जो तुमने मुझसे कहा है। पर अब तुम मेरी गेंद तो निकाल दो।"

उसने यह सोच कर यह वायदा कर दिया कि एक बार अगर वह मेंढक उस कुँए में कूद गया तो वह उसमें से कभी भी नहीं निकल पायेगा और मुझे अपना वायदा पूरा करने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। पर हो सकता है कि वह उसकी गेंद निकाल दे।

मेंढक तुरन्त ही उस कुँए में कूद गया और कुछ ही मिनटों में अपने मुँह में उसकी गेंद ले कर ऊपर आ गया और उसको कुँए के बाहर राजकुमारी के पास सूखी जमीन पर उछाल कर फेंक दी।

राजकुमारी अपनी गेंद को पा कर इतनी खुश थी कि उसने तो मेंढक को धन्यवाद भी नहीं दिया और वह अपनी गेंद उठा कर अपने महल में भाग गयी।

मेंढक पीछे से चिल्लाया — "ओ राजकुमारी, अपना वायदा याद रखना।" पर राजकुमारी ने तो जैसे सुना ही नहीं। उसको

मेंढक से किये गये वायदे को याद रखने की जरूरत भी क्या थी। उसको तो अपनी गेंद मिल गयी थी।

अगले दिन जब राजकुमारी खाना खाने बैठी तो किसी ने उसके महल का दरवाजा खटखटाया।

पहले तो किसी ने बहुत धीरे से दरवाजा खटखटाया जिसे केवल राजकुमारी ही सुन सकी। पर फिर उसके खटखटाने की आवाज उसको नौकरों ने भी सुनी और फिर जल्दी ही वह खटखटाने की आवाज इतनी बढ़ गयी कि उसको राजा ने भी सुना —

राजकुमारी, राजकुमारी, सुनो, राजकुमारी, राजकुमारी, अपना वायदा निभाओ
खेलते समय तुम्हारी गेंद खो गयी थी, फिर वह गेंद तुमको वापस दी गयी
ऐसा मत समझो कि मैं तुमको परेशान कर रहा हूँ
वायदा तो वायदा है अपने पिता से पूछ लो

वह मेंढक महल के बाहर दरवाजे पर खड़ा था।

राजा ने अपनी बेटी से पूछा — "यह वायदे के बारे में क्या बात है बेटी? हमको हमेशा अपने वायदे निभाने चाहिये। क्या तुमने इस मेंढक से कोई वायदा किया था?"

राजकुमारी बोली — "पिता जी, कल खेलते हुए मेरी गेंद कुँए में गिर गयी थी। मैंने उससे केवल वह गेंद लेने के लिये ही वायदा किया था। पिता जी, वह एक बहुत ही गन्दा बूढ़ा मेंढक है। किसी मेंढक से किये गये वायदे का क्या निभाना।"

मेंढक बाहर से ही बोला — "पहली बात यह कि मैं गन्दा नहीं हूँ। दूसरी बात यह कि मैं तुमको फिर से याद दिला दूँ कि मैं बूढ़ा भी नहीं हूँ। और तीसरी बात तो यह है कि वायदा तो वायदा है चाहे वह किसी से भी किया जाये।"

राजा ने अपनी बेटी से कहा — "बेटी, यह मेंढक ठीक कहता है। वायदा तो वायदा है चाहे वह किसी से भी किया जाये। इस मेंढक को महल के अन्दर बुलाओ और अपना वायदा पूरा करो।"

राजकुमारी ने फिर वैसा ही किया जैसा कि उसके पिता ने कहा था। उसने महल का दरवाजा खोला और मेंढक कूद कर अन्दर आ गया

वह राजकुमारी से बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद। यह पहला वायदा है जो तुमने पूरा किया। तुमने कहा था कि मैं अन्दर आ सकता हूँ और मैं अब यहाँ हूँ।"

मेंढक फिर कूदता हुआ खाने के कमरे में चला गया और बोला — "अब मुझे मेज पर बिठाओ।"

राजकुमारी उसको ना कहने ही वाली थी कि उसने देखा कि उसके पिता उसको देख रहे हैं सो उसने उसको उठा कर अपने पास वाली कुरसी पर बिठा लिया।

मेंढक बोला — "यह तुमने दूसरा वायदा पूरा किया। अब तुम अपनी सोने की थाली मेरी तरफ खिसकाओ ताकि मैं उसमें से खाना खा सकूँ।"

राजकुमारी बोली "उफ।" और उसने वह थाली मेंढक की तरफ खिसका दी। मेंढक ने उसमें से पेट भर कर खाया और बोला — "अब तुम मुझे अपने कमरे में ले चलो ताकि मैं वहॉ तुम्हारे बिस्तर पर सो सकूँ।"

राजकुमारी बोली — "मेरे बिस्तर में?" वह बहस नहीं करना चाहती थी पर वह जानती थी कि वह क्या कह रही है क्योंकि उसने वायदा किया था।

वह एक राजा की बेटी थी, और हालॉकि वह काफी बिगड़ी हुई थी फिर भी उसको मालूम था कि उसको अपना वायदा निभाना ही था।

जैसे ही उसने मेंढक को उठाया तो उसने अपनी नाक दूसरी तरफ कर ली। उसको ले जा कर उसने अपने लाल मखमल के तकिये पर रख दिया। फिर वह उस तकिये को ऊपर ले गयी और उस तकिये को ले जा कर अपने बिस्तर पर रख दिया।

खुद वह जा कर एक कुरसी पर बैठ गयी और मेंढक की तरफ देखती रही कि वह मेंढक आगे क्या करता है। मेंढक ने अपनी ऑखें बन्द की और सो गया। एक मेंढक उसके अपने बिस्तर में? उफ। वह सारी रात उसने वहीं कुरसी पर सोते हुए गुजार दी।

जब सुबह की रोशनी की पहली किरन खिड़की के रास्ते उसके कमरे में आयी तो मेंढक जाग गया और बिस्तर पर से कूद पड़ा।

वह कमरे से बाहर आया, सीढ़ियों से नीचे उतरा और महल के बाहर चला गया।

उसके बाहर जाते ही राजकुमारी की जान में जान आयी कि अब मुझे उसे चूमना नहीं पड़ेगा। पर अगली रात मेंढक फिर महल वापस आया और बोला —

राजकुमारी, राजकुमारी, सुनो, राजकुमारी, राजकुमारी, अपना वायदा निभाओ
खेलते समय तुम्हारी गेंद खो गयी थी, फिर वह गेंद तुमको वापस दी गयी
ऐसा मत समझो कि मैं तुमको परेशान कर रहा हूँ
वायदा तो वायदा है अपने पिता से पूछ लो

मेंढक ने जैसा पहली रात किया वैसे ही दूसरी रात भी किया, और फिर तीसरी रात भी।

इस तरह तीन रात राजकुमारी ने मेंढक को महल में आने दिया। अपने साथ खाने की मेज पर बैठने दिया। अपनी सोने की थाली में से खाना खाने दिया और अपने बिस्तर में सोने दिया। और तीनों रात वह खुद कुरसी पर सोती रही।

पर वह खुश थी कि अपना वायदा रखने के लिये उसे मेंढक को कम से कम चूमना नहीं पड़ा।

लेकिन तीसरी रात राजकुमारी ने एक अजीब सा सपना देखा। उसने देखा कि मेंढक उससे बातें कर रहा है। सपने में उसने मेंढक को यह कहते हुए सुना कि वह सचमुच में एक राजकुमार था और एक बुरी परी ने शाप दे कर उसको मेंढक में बदल दिया था।

उसने मेंढक से कहा कि जब वह किसी राजकुमारी के बिस्तर पर तीन रात सोयेगा और वह राजकुमारी उसको चूमेगी तब वह फिर से राजकुमार में बदल जायेगा।

यह सपना देख कर राजकुमारी की ऑख खुल गयी तब उसको लगा कि वह तो सपना देख रही थी। उसने इधर उधर देखा तो वह ठंडा मेंढक तो अभी भी उसके बिस्तर पर बेखबर पड़ा सो रहा था।

फिर वह अपने सपने के बारे में सोचने लगी। उसने अपने वायदे के बारे में भी सोचा। उसे याद आया कि उसने मेंढक से उसे चूमने का वायदा भी किया है।

वह अपनी कुरसी से उठी और अपने बिस्तर के ऊपर सोते हुए मेंढक के पास गयी। उसने अपनी ऑखें बन्द कीं और उस मेंढक के माथे पर उसको चूम लिया।

लो, जैसे ही उसके होठों ने मेंढक को छुआ वह मेंढक तो सचमुच में ही राजकुमार बन गया। राजकुमारी ने अपनी ऑखें समय से खोल ली थीं जिससे वह मेंढक को राजकुमार के रूप में बदलते देख सकी।

उसके बाद राजकुमार ने ऑखें खोलीं तो उसने देखा कि राजकुमारी तो उसके ऊपर झुकी खड़ी है। वह बोला — "तुमने अपना वह तीसरा वायदा भी निभाया हालॉकि वह वायदा तुमने एक मेंढक से किया था।"

राजकुमार सुन्दर था। उस समय राजकुमारी को अपनी परछाईं की तरफ देखने की बजाय राजकुमार की तरफ देखना ज़्यादा अच्छा लग रहा था।

राजकुमार ने राजकुमारी से पूछा — "क्या मैं तुम्हारे पिता से शादी के लिये तुम्हारा हाथ माँग सकता हूँ? अगर वह तुमको मुझसे शादी करने की इजाज़त दे देंगे तो मैं तुमको अपने पिता के राज्य ले जाऊँगा जहाँ मैं तुमसे शादी कर लूँगा और तुम्हें तब तक प्यार करूँगा जब तक हम ज़िन्दा रहेंगे।"

यह सुन कर राजकुमारी मुस्कुरा दी और उसने तुरन्त ही उसका जवाब दे दिया। उसने भी उससे शादी करने और उसको ज़िन्दगी भर प्यार करने का वायदा किया।

उसने यह भी याद रखा कि वायदा तो वायदा होता है उसको निभाना ही चाहिये चाहे वह किसी से भी किया गया हो।

2 मेंढक और राजकुमारी[2]

जर्मनी की यह कहानी भी इससे पहले वाली कहानी "मेंढक राजकुमार" जैसी ही है।

एक बार की बात है कि एक शाम को एक राजकुमारी ने अपनी टोपी पहनी और जूते पहने और अकेली ही घूमने चल दी। चलते चलते वह एक जंगल में पहुँच गयी।

वहाँ उसने एक ठंडे पानी का सोता देखा जिसके बीच में एक गुलाब खिला हुआ था। वह वहीं सुस्ताने के लिये उस सोते के पास बैठ गयी। उसके हाथ में एक सुनहरी गेंद थी जो उसको बहुत अच्छी लगती थी।

वह वहाँ बैठी बैठी उस गेंद को उछाल उछाल कर खेल रही थी। एक बार वह इतनी ऊँची उछली कि वह उसके हाथ नहीं आयी और जमीन पर लुढ़कती चली गयी।

राजकुमारी उसके पीछे दौड़ी भी पर उसे पकड़ न सकी और वह पानी में चली गयी। राजकुमारी ने पानी में झाँका परन्तु पानी गहरा होने की वजह से वह पानी में जाने का साहस न कर सकी।

---

[2] The Frog Prince – a folktale of Germany, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.eastoftheweb.com/short-stories/UBooks/FrogPrin.shtml
This folktale was written by Brothers Grimm.

राजकुमारी बहुत दुखी हुई और कहने लगी — "काश, मेरी गेंद वापस मिल जाये तो मैं अपनी सब वेशकीमती कपड़े और जवाहरात और जो कुछ भी मेरे पास है मैं उसे वह सब दे दूँ।"

यह सुनते ही एक मेंढक ने अपना मुँह पानी से बाहर निकाला और बोला — "राजकुमारी, तुम इतनी ज़ोर से क्यों रोती हो?"

राजकुमारी बोली — "ओ गन्दे मेंढक, तुम मेरी क्या सहायता कर सकते हो? मेरी सुनहरी गेंद पानी में गिर गयी है। मैं उसी के लिये रोती हूँ।

पर अगर तुम उसे निकाल दो तो मैं अपनी सब वेशकीमती कपड़े और जवाहरात और जो कुछ भी मेरे पास है मैं वह सब तुम्हें दे दूँगी।"

मेंढक बोला — "मुझे तुम्हारे वेशकीमती कपड़े और जवाहरात आदि नहीं चाहिये, मगर अगर तुम मुझे प्यार करो, अपने साथ रखो, अपने साथ सोने की थाली में खाना खिलाओ, अपने छोटे से बिछौने पर सोने दो तो मै तुम्हारी गेंद ला सकता हूँ।"

राजकुमारी सोचने लगी कि यह मेंढक क्या बेकार की बातें कर रहा है। यह तो पानी से बाहर ही नहीं आ सकता। पर हो सकता है कि वह मेरी गेंद निकाल दे इसलिये मैं इसकी बात माने लेती हूँ।

यही सोच कर वह बोली — "अगर तुम मेरी गेंद निकाल दो तो जो कुछ तुम चाहते हो वह मैं तुम्हारे लिये करने को तैयार हूँ।"

मेंढक ने एक डुबकी लगायी और कुछ ही पल में गेंद मुँह में दबाये ऊपर आ गया और उस गेंद को उसने जमीन पर फेंक दिया। जैसे ही राजकुमारी ने अपनी गेंद देखी तो वह बहुत खुश हुई और उसे उठाने को दौड़ी।

वह अपनी गेंद पा कर इतनी ज़्यादा खुश थी कि उसने मेंढक की तरफ मुड़ कर भी नहीं देखा और अपनी गेंद उठा कर तुरन्त ही घर की ओर दौड़ी चली गयी।

मेंढक ने उसे पुकारा भी — "रुको, राजकुमारी रुको, अपने वायदे के अनुसार मुझे भी अपने साथ ले लो।" परन्तु वह तो यह जा और वह जा।

अगले दिन राजकुमारी जब खाना खाने बैठी तो उसने कुछ अजीब सी आवाज सुनी। उसे लगा जैसे कोई महल की संगमरमर की सीढ़ियों से ऊपर आ रहा है और फिर तुरन्त बाद ही किसी के धीरे से दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनायी दी...

दरवाजा खोलो प्यारी राजकुमारी दरवाजा खोलो तुम्हारा प्यार खड़ा है
याद करो हमने तुमसे क्या कहा था उस फव्वारे के साये में जो जंगल में है।

तब राजकुमारी दौड़ कर गयी और उसने दरवाजा खोला। उसके सामने एक मेंढक खड़ा था। उसको तो वह बिल्कुल भूल ही गयी थी। वह डर गयी और डर के मारे तुरन्त ही दरवाजा बन्द करके अपनी जगह पर आ बैठी।

उसके पिता राजा ने उसको डरा हुआ देख कर उससे पूछा — "क्या बात है बेटी? तुम इतना डरी हुई क्यों हो?"

वह बोली — "पिता जी, वहॉ एक गन्दा सा मेंढक है जिसने आज सुबह पानी में से मेरी गेंद बाहर निकाली थी।

मैंने उसे यह सोच कर उससे अपने साथ रहने के लिये कह दिया था कि वह तो कभी पानी से बाहर आ ही नहीं सकता मगर वह तो यहॉ खड़ा है और अन्दर आना चाहता है।"

इसी समय मेंढक ने फिर उसका दरवाजा खटखटाया और अपनी पहले वाली लाइनें दोहरायीं —

दरवाजा खोलो प्यारी राजकुमारी दरवाजा खोलो तुम्हारा प्यार खड़ा है
याद करो हमने तुमसे क्या कहा था उस फव्वारे के साये में जो जंगल में है

राजा बोला — "बेटी, जब तुमने उससे ऐसा कहा है तो तुम्हें अपना वायदा निभाना चाहिये और उसे अन्दर बुला लेना चाहिये।"

राजकुमारी ने दरवाजा खोल दिया और वह गन्दा मेंढक फुदकता हुआ अन्दर आ गया।

अन्दर आ कर वह राजकुमारी से बोला — "मुझे अपनी पास वाली कुरसी पर बैठने में मेरी मदद करो न।" न चाहते हुए भी राजकुमारी ने उसे अपने पास वाली कुरसी पर बिठा लिया।

जैसे ही राजकुमारी ने उसे अपने पास वाली कुरसी पर बिठाया, वह बोला — "अब तुम अपनी थाली मेरे पास लाओ ताकि मैं भी उसमें से खाना खा सकूँ।"

राजकुमारी को उससे बड़ी नफरत सी हुई कि वह कैसे एक मेंढक को अपने साथ अपनी थाली में खाना खिलाये पर अपने वायदे को ध्यान में रखते हुए उसने चुपचाप अपनी सोने की थाली मेंढक के पास खिसका दी।

जब मेंढक पेट भर खाना खा चुका तो बोला — "अब मैं बहुत थक गया हूँ, तुम मुझे अपने पलंग पर ले चलो, मैं सोऊँगा।"

न इच्छा होते हुए भी राजकुमारी उसे अपने हाथों में उठा कर ऊपर ले गयी और अपने बिछौने में अपने तकिये के ऊपर उसे लिटा दिया जहाँ वह सारी रात सोता रहा। सुबह होते ही वह कूदा और घर से बाहर चला गया।

राजकुमारी ने सोचा कि शायद अब वह चला गया और अब फिर नहीं आयेगा मगर यह उसकी भूल थी क्योंकि अगले दिन शाम को वह फिर आ गया और फिर वैसा ही हुआ जैसा कि पहली शाम को हुआ था।

वह आ कर बोला —

दरवाजा खोलो प्यारी राजकुमारी दरवाजा खोलो तुम्हारा प्यार खड़ा है
याद करो हमने तुमसे क्या कहा था उस फव्वारे के साये में जो जंगल में है

राजकुमारी ने फिर से दरवाजा खोला तो देखा कि वही मेंढक फिर दरवाजे पर खड़ा था। वह फिर अन्दर आ गया और पहली रात की तरह से राजकुमारी के साथ खाना खाया और फिर उसके बिस्तर पर सो गया और सुबह तक सोता रहा।

और फिर तीसरी शाम को भी ऐसा ही हुआ। परन्तु अगले दिन सुबह उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने अपने बिछौने पास मेंढक की बजाय एक सुन्दर राजकुमार को खड़े देखा।

तब उस राजकुमार ने उसे बताया कि एक बुरी परी ने उसको शाप दे दिया था जिससे वह मेंढक में बदल गया था और उसे इस रूप में तब तक वहॉ रहना था जब तक कोई राजकुमारी आ कर उसे निकाले नहीं और अपने साथ सुलाये नहीं।

तुमने मेरे ऊपर पड़ा यह जादू दूर कर दिया। अब मेरी कोई इच्छा नहीं है सिवाय इसके कि तुम मेरे साथ मेरे पिता के राज्य में चलो जहॉ मैं तुमसे शादी कर सकूॅ। मैं तुमसे वायदा करता हूॅ कि मैं तुमको ज़िन्दगी भर प्यार करता रहूॅगा।"

राजकुमारी तुरन्त तैयार हो गयी। आठ घोड़ों की शाही सवारी में बैठ कर वे राजकुमार के राज्य चल दिये। वहॉ जा कर उनकी शादी हो गयी। सारे राज्य में खूब खुशियॉ मनायी गयीं और वे सारी ज़िन्दगी सुख से रहे।

3 बीन्स एक तरफ से फटी हुई क्यों[3]

यह बहुत पुरानी बात है कि जर्मनी में एक बार एक बुढ़िया के घर में उसकी आलमारी में केवल एक समय के पकाने के लायक बहुत थोड़ी सी बीन्स[4] रह गयी थीं।

उसने वे बीन्स उठायीं और उनको पकाने के लिये एक खाली बरतन में डाला। जैसे ही वे बीन्स उसने उस खाली बरतन में डालीं और वे उस बरतन की तली से जा कर टकरायीं। उनमें से एक बीन उछल कर बरतन के बाहर आ गयी और फर्श पर कुछ दूर जा कर गिर गयी।

उस बुढ़िया को यह पता ही नहीं चला कि एक बीन बरतन में से छिटक कर बाहर जा पड़ी है। उसने उस बरतन में पानी डाला और उसके नीचे आग जला दी।

उसने थोड़ा सा भूसा धीमी जलती आग पर डाला ताकि वह जल्दी से जल जाये। जैसे ही वह ऐसा कर रही थी कि हवा का एक झोंका आया और उसमें से एक तिनके को वहॉ से उड़ा कर ले गया

[3] Why Beans Have a Split Side – a folktale from Germany, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=62
Adapted from the "Brother's Grimm" story "The Straw, the Coal and the Bean".

[4] Beans is generic term for any kind of seed grown in a pod (legumes). They can be green also with pod like green beans, cluster beans etc; or dry beans also like soy beans, broad beans, black-eyed beans, all whole pulses (lentils, black lentils, green lentils etc). Here beans word means dry beans like black-eyed beans. See its picture above.

और वह तिनका भी उड़ कर फ़र्श पर पड़ी उस बीन के पास जा गिरा।

उस बुढ़िया को इस तिनके के उड़ जाने का भी पता नहीं चला। बरतन के नीचे आग जला कर वह बुढ़िया अपने दूसरे कामों में लग गयी।

पर जैसे ही वह आग के पास से हटी कि एक लाल जलता हुआ कोयला आग में से कूदा और उस तिनके और बीन के पास जा पड़ा।

बीन ने उन दोनों को देखा तो बोली — "अच्छे दोस्तों, तुम लोग कहॉ से आये हो?"

कोयला बोला — "अपनी अच्छी किस्मत से मैं आग में जलने से बच कर आ गया हूँ वरना मैं तो उस आग में जल कर राख ही हो गया होता।"

तिनका बोला — "मैं भी आग में जलने से बच कर आ गया हूँ। धन्यवाद उस हवा के झोंके का जिसने मुझे वहॉ से उड़ा कर और यहॉ डाल कर आग से आजादी दी।

मेरे भाई लोग और मैं एक छोटे से बक्से में पड़े हुए थे। हम लोग किसी को कोई तकलीफ भी नहीं पहुँचा रहे थे कि बस उस बुढ़िया ने हमको जलाने की कोशिश की। केवल मैं ही वहॉ से बच सका।"

बीन बोली — "ऐसा लगता है कि हम लोगों की अच्छी किस्मत ने हम सबकी सहायता की है। कुछ ही मिनटों में अपनी दूसरी बहिनों की तरह से मैं भी पानी से भीग जाती और उबल जाती जब तक कि मेरी खाल मेरे शरीर से अलग नहीं हो गयी होती।"

तिनका बोला — "पर अब हम क्या करें? क्योंकि यह जगह तो हममें से किसी के लिये भी सुरक्षित नहीं है।"

बीन बोली — "क्योंकि हम सब इस मुसीबत से एक साथ बचे हैं इसलिये ऐसा लगता है कि हम लोगों को अब साथ साथ ही रहना चाहिये और दुनियॉ में बाहर निकल कर अपनी किस्मत आजमानी चाहिये।"

यह सलाह बाकी दोनों को अच्छी लगी सो वे तीनों उस बुढ़िया की ऑख बचा कर घर छोड़ कर चल दिये। बहुत जल्दी ही वह बुढ़िया को बहुत पीछे छोड़ कर बहुत आगे चले गये।

वे तीनों अपने आजादी के रास्ते पर चले जा रहे थे कि वे एक नदी के किनारे आ पहुॅचे। क्योंकि वह नदी बहुत ही उथली थी और चौड़ी भी कम थी इसलिये उसके पार करने के लिये किसी आदमी या जानवरों ने उसके ऊपर कोई पुल नहीं बनाया था।

पर इस नदी को चल कर पार करना इन तीनों यात्रियों में से किसी के लिये भी मुमकिन नहीं था। वे उस नदी को पार नहीं कर पा रहे थे।

तिनका बोला — "मुझे एक विचार सूझा है। क्योंकि मैं हम सबमें सबसे लम्बा हूँ तो मैं नदी के इस पार से उस पार तक लेट जाता हूँ और तुम दोनो मेरे ऊपर चढ़ कर इस नदी को पार कर लो।"

बीन और कोयला यह सुन कर बहुत खुश हुए। सो तिनका नदी के दोनों किनारों के बीच में लेट गया।

कोयले ने उसके ऊपर चढ़ कर नदी को पार करना शुरू किया। तो पहले तो वह उसके ऊपर जल्दी से चढ़ा पर तिनका मजबूती से लेटा रहा पर जब वह कोयला नदी के आधे रास्ते आया तो उसने देखा कि पानी तो नदी में बहुत ज़ोर से बह रहा है। उस पानी के बहाव को देख कर वह डर गया।

पहले तो वह धीरे धीरे चला पर फिर वह तिनके के बीच में आ कर तो बिल्कुल ही रुक गया। उसके बोझ और गर्मी से तिनका टूट गया। कोयला अभी भी खूब लाल और गरम था। सो दोनों पानी में गिर गये और पानी के साथ बह गये।

बीन की सॉस में सॉस आयी जब उसने देखा कि वही एक ज़िन्दा बच गयी है। वह हॅसने लगी और इतनी हॅसी इतनी हॅसी कि वह एक तरफ से फट गयी।

यहीं यह बीन भी खत्म हो गयी होती और यह कहानी भी पर ऐसा नहीं हुआ। तभी वहॉ से एक दरजी गुज़र रहा था। उसने यह सब देखा तो उसको बीन के ऊपर दया आ गयी।

उसने अपना सुई धागा निकाला जो वह हमेशा अपने पास रखता था। उसने तुरन्त ही बीन को उठा लिया और उसको उसकी फटी हुई जगह से सिल दिया।

इस तरह से वह बीन फिर बहुत दिनों तक ज़िन्दा रही। उसका परिवार भी हुआ और वह फिर बूढ़ी हो कर मरी।

जब दरजी ने फटी बीन को सिला तो इत्तफाक से उस समय के पास केवल काला धागा ही था सो उसने उसे काले धागे से ही सिल दिया। सो उस दिन से ले कर आज तक हर बीन चाहे कोई भी बीन क्यों न हो एक तरफ से गाढ़े रंग से सिली हुई ही होती है।

4 दलिये का बरतन[5]

एक बार की बात है कि जर्मनी में एक छोटी सी गरीब लड़की अपनी मॉ के साथ रहती थी। ये दोनों एक ऐसे गॉव में रहती थीं जहॉ सारे ही लोग गरीब थे। लोगों के पास खाना ही नहीं था।

यह लड़की भी बजाय खेलने के अपना सारा समय खेतों में गुजारती थी जहॉ वह फसल कट जाने के बाद अन्न के दाने ढूँढा करती थी।

इस तरह से दाने बटोरना आसान काम नहीं था। कई बार उसको अपने हाथों पर चलना पड़ता और दानों की वे बालियॉ उठानी पड़ती जो मिट्टी में पड़ी होतीं थीं जो फसल काटने के बाद आदमी लोग वहॉ छोड़ जाते थे।

वह और कई और लड़कियॉ उन खेतों के मालिक से उनके खेतों में से इस तरह अन्न बीनने के लिये इजाज़त मॉग लेती थीं और इस तरीके से थोड़ा बहुत अनाज इकट्ठा कर लेती थीं।

वे भी उनको यह इजाज़त इस शर्त पर दे देते थे कि जो कुछ वे इकट्ठा करेंगीं उसका आधा वे उनको दे देंगी।

[5] The Porridge Pot - a folktale from Germany, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=14
Collected and retold by Mike Lockett

जब वे दाने बीन रही होती थीं तो उनको चिड़ियों का बहुत खयाल रखना पड़ता था। वे चिड़ियें उन लड़कियों से मुकाबला करतीं और वहॉ से दाने उठा लेतीं।

कुल मिला कर यह एक मेहनत का काम था – कुछ दाने उठाना, फिर उनकी धूल झाड़ना, अपने ऐप्रन में रखना और हर समय वहॉ आती चिड़ियों को उड़ाना।

वे चिड़ियॉ उनसे नाराज रहतीं क्योंकि उनको लगता कि वे लड़कियॉ उनके हिस्से का खाना ले जा रही हैं।

सारी सुबह गरमी में काम करके वे लड़कियॉ उस खेत का आखिरी दाना तक उठा लेती थीं। उसका आधा वे उस खेत के मालिक को दे देती थीं जैसा कि उनका उनसे वायदा था और बाकी का आधा घर ले आती थीं।

एक दिन जब वे लड़कियॉ दाने उठा कर घर की तरफ रवाना हुईं तो दोपहर हो चुकी थी। रास्ते में उनको एक छोटी सी बुढ़िया मिली जो खाने की भीख मॉग रही थी — "नमस्ते बच्चों, क्या तुम मुझे कुछ खाना दोगी? मैं बहुत भूखी हूॅ।"

दूसरी लड़कियों ने तो जब वे उस बुढ़िया के पास से निकलीं तो उधर से उन्होंने अपना मुॅह फेर लिया पर वह छोटी गरीब लड़की उसकी तरफ देखे बिना न रह सकी। वह उसके पास आ गयी।

बुढ़िया बोली — "बेटी, क्या तुम एक बुढ़िया की सहायता नहीं करोगी?"

हालॅकि वह लड़की गरीब थी और उसने अपने इकट्ठा किये हुए दानों में से आधे दाने तो खेत के मालिक को ही दे दिये थे अब वे बचे हुए आधे दाने भी उन दोनों मॅ बेटी के लिये काफी नहीं थे पर उसकी मॉ ने उसको चीज़ों को बॉट कर इस्तेमाल करना सिखाया था।

उसको मालूम था कि अगर उसमें से उसने उस बुढ़िया को कुछ दाने भी दे दिये तो उसके अपने दलिये में पानी ज़्यादा हो जायेगा और उनका पेट नहीं भरेगा।

फिर भी उसने अपने ऐप्रन में इकट्ठे किये हुए दानों के दो बराबर हिस्से किये और उनमें से एक हिस्सा उस बुढ़िया को दे कर कहा — "भगवान आपका भला करे।"

बुढ़िया उन दानों को ले कर बहुत खुश हो गयी। वह बोली — "बेटी, क्योंकि तुमने मेरे ऊपर इतनी दया की है तो तुम यह बरतन लेती जाओ।"

इतना कह कर उसने अपने पीछे की एक झाड़ी के पीछे से लोहे का एक बरतन निकाला और उस लड़की को दे दिया।

पहले तो वह लड़की उस बरतन को ले नहीं रही थी पर उसको लगा कि उस बरतन को उस बुढ़िया से न ले कर वह उसका दिल

दुखा रही है सो उसने उससे वह बरतन ले लिया और बोली — "बहुत बहुत धन्यवाद मॉ जी।"

बुढ़िया बोली — "कोई बात नहीं बेटी। खुश रहो।"

उसके बाद उस बुढ़िया ने उसको एक भेद की बात बतायी — "तुम यह बरतन ले जाओ। तुमको केवल यह कहना है "ओ छोटे बरतन उबलो।" बस इस बरतन में तुम्हारे लिये मीठा दलिया उबलने लगेगा।

उसके बाद उससे कहना "ओ छोटे बरतन रुक जाओ।" तो इस बरतन में वह दलिया उबलना बन्द हो जायेगा।

उस छोटी लड़की को यह सब कहानी सी लगी पर फिर भी वह वह उस बरतन को अपने घर ले गयी।

जब वह घर पहुॅची तो उसने सोचा कि उसको उस बरतन को कम से कम जॉचना तो चाहिये कि उस बुढ़िया की कहानी सच थी भी या नहीं।

उसने बरतन को रसोईघर में रखा और बोली — "ओ छोटे बरतन उबलो।" बस तुरन्त ही उसमें कई दिनों के लिये दलिया उबल कर तैयार हो गया।

उसने फिर कहा — "ओ छोटे बरतन रुक जाओ।" बस उस बरतन में वह दलिया उबलना बन्द हो गया।

उस लड़की और उसकी मॉ ने वह दलिया खुद भी खाया और अपने उन पड़ोसियों को भी दिया जो उनके इधर उधर रहते थे।

क्योंकि यह अच्छी बात नहीं थी कि जब पास में लोग भूखे हों तो खाना केवल खुद ही खाया जाये।

जब उन्होंने देखा कि उनके सामने वाले और पीछे वाले घरों में भी खाना नहीं था तो उस लड़की ने घर आ कर फिर उस बरतन से कहा — "ओ छोटे बरतन उबलो।"

एक बार उस बरतन ने फिर से काफी सारा दलिया कई दिनों के लिये उबाल दिया। वह उसमें से कुछ दलिया उन लोगों को भी दे आयी जिनके पास खाना नहीं था क्योंकि यह अच्छी बात नहीं थी कि जब पास में लोग भूखे हों तो खाना केवल खुद ही खाया जाये।

कुछ हफ्ते बाद जब वह लड़की घर में नहीं थी, अपनी किसी दोस्त के घर गयी हुई थी तो उसकी मॉ को भूख लगी। उसने अपनी बेटी को उस बरतन में दलिया पकाते देखा था सो उसने भी बरतन को बोल दिया — "ओ छोटे बरतन उबलो।"

बस उस बरतन में दलिया उबलने लगा। पर उसको यह नहीं मालूम था कि उसको रोकते कैसे हैं सो वह उसको रोक नहीं पायी। दलिया उबलता गया, उबलता गया, और उबलता गया। वह बरतन के बाहर तक निकल गया। फिर वह रसोईघर के फर्श पर फैल गया। क्योंकि उसको कोई रोकने वाला तो था नहीं।

वहॉ से भी बाहर निकल कर वह घर भर में फैल गया। वहॉ से भी आगे बढ़ कर वह बाहर गली में चला गया और सबके घरों में घुस गया।

कुछ देर बाद वह छोटी लड़की घर वापस लौटी तो उसने अपने घर में से दलिये की नदी बहती देखी। वह तुरन्त बाहर से चिल्लायी — "ओ छोटे बरतन रुक जाओ।"

यह सुनते ही उस बरतन में दलिया उबलना बन्द हो गया।

पर अब सब घरों में लोग अपने अपने तरीके से अपना दलिया खा रहे थे। सबके लिये यह एक बहुत बड़ा आश्चर्य था पर कोई शिकायत नहीं कर रहा था। फिर वे महीनों तक भूखे नहीं रहे।

यह अच्छी बात नहीं है न कि जब पास में लोग भूखे हों तो खाना केवल खुद ही खाया जाये।

5 इच्छाऐं पूरी करने वाली खाल[6]

एक बार एक लकड़हारा जिसका नाम रुडोल्फ[7] था अपनी पत्नी के साथ एक जंगल में एक झोंपड़ी में रहता था। वह बहुत ही गरीब था।

वह जंगल जहॉ वह रहता था इतना घना था कि उधर कोई नहीं आता जाता था लेकिन फिर भी उस लकड़हारे को कभी अकेलापन महसूस नहीं होता था।

जब वह घर पर होता तो अपनी पत्नी के साथ आग के पास बैठ कर उससे बातें करता और जब वह जंगल में जाता तो वहॉ वह जंगल के जानवरों और चिड़ियों से बातें करता।

वह अक्सर उनसे कहा करता — "मैं दुनियॉ के खजाने को छोड़ कर तुम्हारे जैसे दोस्तों के साथ रहना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

एक दिन एक राजा उस जंगल में शिकार खेलने आया। उसके साथ उसकी रानियॉ, राजकुमार, राजकुमारियॉ, दरबारी और उनकी पत्नियॉ भी थे।

पहले वे एक बार आये फिर वे दोबारा आये और फिर वे तीसरी बार भी आये। अब उनको यह जंगल इतना पसन्द आया कि वे करीब करीब रोज ही आने लगे।

---

[6] The Wishful Skin – a folktale from Germany, Europe.

[7] Rudolf – name of the woodcutter

उनके कपड़े बहुत बढ़िया होते। वे चॉदी की घंटियॉ पहने घोड़ों पर सवार हो कर आते। साथ में उनके नौकर चाकर अच्छे अच्छे खाने और बढ़िया शराब लाते और फिर वे जंगल में खूब मौज मस्ती मनाते।

कभी कभी कोई रुडोल्फ की झोंपड़ी के तरफ भी आ निकलता और उसमें झॉकता। अन्दर झॉक कर वह हॅसता और कहता — "उॅह, इस पुरानी मेज को देखो जिस पर मेजपोश भी नहीं है। अरे, यहॉ तो कुरसी भी नहीं है। यह कितने पुराने ढंग का घर है।"

जब वह तीन टॉग का स्टूल देखता तो कहता — "ओह, इस घर में रहने वाले की पैन्ट में तो गद्दियॉ लगी होनी चाहिये तभी वह इतने सख्त स्टूल पर बैठ सकता है।"

और फिर वह जब रुडोल्फ की जोड़ और पैबन्द लगी पैन्ट देखता तो कहता — "मैंने ठीक ही कहा था न?"

रुडोल्फ ऐसी अपमानजनक बातें सुनता और खून का सा घूॅट पी कर रह जाता। धीरे धीरे वह असन्तुष्ट रहने लगा। वह सोचता — "मैं इतना गरीब क्यों हूॅ और वे लोग इतने अमीर क्यों हैं।"

और वह ऐसे चेहरे से जंगल जाता कि जंगल के सारे पशु पक्षी उसको देख कर घबरा जाते।

एक दिन एक खरगोश ने उससे कहा — "रुडोल्फ भाई, क्या बात है तुम कुछ उदास दिखायी दे रहे हो?"

रुडोल्फ बनावटी मुस्कुराहट के साथ बोला — "कोई खास बात नहीं खरगोश भाई, बस मेरी भी कभी कभी इच्छा होती है कि काश, मैं भी अमीर होता। बस इतनी सी बात है।"

खरगोश मुस्कुराया और बोला — "बिना इच्छा पूरी करने वाली खाल के कोई भी इच्छा करना बेवकूफी है। तुम यहीं रुको मैं अभी आता हूँ।"

कह कर वह खरगोश वहाँ से जाने ही वाला था कि रुडोल्फ अपनी कुल्हाड़ी रख कर बैठ गया और बोला — "तुमने क्या कहा खरगोश भाई? इच्छा पूरी करने वाली खाल? यह क्या बला है?"

खरगोश बोला — "रुको, मैं अभी तुम्हें दिखाता हूँ।" कह कर वह झाड़ियों के पीछे कूद गया और तुरन्त ही एक खाल ले कर लौटा जो देखने में मकड़ी के जाले जैसी बुनी हुई लगती थी।

वह बोला — "यह देखो, यह है वह खाल। पर इस खाल के बारे में तुम किसी से कुछ कहना नहीं। यह खाल परियों की है और वे हमेशा इसे छिपा कर रखती हैं क्योंकि हमेशा ही उन्हें इसकी चोरी का डर बना रहता है। यह बड़ी कीमती है और यह इच्छाओं की बनी हुई है।"

रुडोल्फ ने खरगोश की ओर चालाकी से देखते हुए कहा — "खरगोश भाई, मान लो अगर मैं इसे पहन लूँ तो?"

सुनते ही खरगोश थोड़ा सा डर गया फिर बोला — "यह खाल मेरी नहीं है रुडोल्फ भाई। सो अगर इसे पहनने के बाद तुमने कोई भी इच्छा की तो परियों को पता चल जायेगा और मैं आफत में पड़ जाऊँगा।

इस खाल में एक खास बात और भी है और वह यह कि अगर इसको पहनने के बाद तुमने कोई भी इच्छा की तो तुम्हारी वह इच्छा तो पूरी हो जायेगी पर इसका एक धागा टूट जायेगा और यह उतनी ही छोटी हो जायेगी क्योंकि इसकी इतनी सारी इच्छाओं में से एक इच्छा पूरी हो गयी।

सो अगर तुम यह खाल पहन लो तो तुम्हारी उतनी सारी इच्छाऐं पूरी हो जायेंगी जितने इसमें धागे हैं।"

रुडोल्फ ने कहा — "बेवकूफ न बनो खरगोश भाई, क्या तुम सोचते हो कि मैं तुम्हें आफत में डालूँगा? पर पहले मुझे इसे देखने तो दो कि यह कैसे काम करती है।"

कह कर उसने अपना कोट उतार दिया और फिर एक ज़ोर की ताली बजायी जिससे खरगोश डर कर उछल पड़ा और उतनी ही देर में रुडोल्फ ने झटके से वह खाल उसके हाथ से छीन कर पहन ली।

"हा, हा, हा, अब मेरी इच्छा है कि यह मुझसे चिपक जाये और कभी अलग न हो।"

बेचारा खरगोश चिल्लाया — "अरे रुडोल्फ भाई यह तुमने क्या किया? इसे मुझे वापस कर दो। परियाँ क्या कहेंगी। तुमने तो पहले

ही अपनी एक इच्छा पूरी करके और इसका एक धागा कम करके इसे छोटा कर दिया है। सुनो, इसे मुझे वापस कर दो।"

रुडोल्फ बोला — "तुम बेवकूफ हो खरगोश भाई, अब तो यह मुझसे अलग हो ही नहीं सकती। मैं इसे तुमको कैसे दे दूँ?"

खरगोश चीखा — "इसे मुझे वापस कर दो नहीं तो ठीक नहीं होगा।"

खरगोश इतने ज़ोर से चीखा कि रुडोल्फ को थोड़ी शरम आ गयी परन्तु साथ में गुस्सा भी आया और वह खरगोश से बोला — "क्या तुम चुप नहीं रहोगे? मेरी इच्छा है कि तुम अभी अभी मेरी ऑखों से दूर हो जाओ।"

वह आगे कुछ और कहने जा ही रहा था कि उसने देखा कि खरगोश तो वहॉ से कब का गायब हो चुका था।

"अहा, मजा तो अब आयेगा। अब मैं जो चाहूँ पा सकता हूँ।" उसने अपना कोट उठाया और घर की ओर चल दिया।

जब वह घर के दरवाजे के पास पहुँचा तो पहले वह कुछ पल सोचता रहा फिर अन्दर घुसा और अपनी पत्नी के पास जा कर बैठ गया। वह उस समय आग के पास बैठी थी।

उसने अपनी पत्नी से कहा — "आज तुम्हारे पास क्या खाना है? क्या तुम्हारे पास बढ़िया खाना है? जैसे मुर्गी, सॉस, कबाब।"

पत्नी उसे आश्चर्य से घूरने लगी कि आज उसके पति को क्या हो गया है। वह बोली — "क्या तुम पागल हो गये हो? यह सब कहॉ से आयेगा? यहॉ तो केवल डबल रोटी और शहद है जो तुम रोज खाते हो।"

"उॅह, आज तो मेरी इच्छा है कि अपने खाने की मेज पर मुर्गा हो, सौस हो, कबाब हो, बढ़िया शराब हो। साथ ही ये सब चीज़ें किसी बढ़िया मेज पर सजी हों जहॉ सोने की तश्तरियॉ हों, चॉदी की चम्मचें हों, ऊॅची ऊॅची कुरसियॉ हों और मखमली गद्दियॉ हों।"

"रुको, रुको," उसकी पत्नी बीच में ही चिल्लायी क्योंकि वह तो अब तक एक नयी मखमली गद्दी वाली कुरसी पर बैठ चुकी थी और मुॅह से निकलते ही रुडोल्फ की सारी इच्छाऐं पूरी होती जा रही थीं।

"क्या, क्यों, कैसे?" पत्नी ने पूछा तो रुडोल्फ बोला — "प्रिये, यह सब इस खाल का कमाल है।" और फिर उसने उस खाल के बारे में उसको सब कुछ बता दिया।

खाल के बारे में सुन कर तो उसकी पत्नी उछल पड़ी और आश्चर्य से उसका बोल भी न फूटा। आश्चर्य कुछ कम होने पर तो उसने अपने पति को फिर चैन ही नहीं लेने दिया।

वह रात भर अपनी इच्छाऍ उसे बताती रही। जो भी इच्छा उनके मुॅह से निकलती वह उसी समय पूरी हो जाती — सुन्दर बढ़िया कपड़े, बहुत सारा धन और सोना, महल, फूलों से भरा

बागीचा, अनगिनत नौकर चाकर, सभी कुछ उनको इस खाल से मिल गया था।

इच्छाएँ पूरी होती रहीं और उन्हें पता भी न चला कि कब एक भयानक घटना घट गयी। रुडोल्फ की पत्नी अपनी इच्छाएँ पूरी करने में इतनी मग्न थी कि उसने देखा ही नहीं कि कब उसका पति सिकुड़ गया और सिकुड़ कर और छोटा होता जा रहा था।

बच्चो क्या तुम्हें याद आया कि ऐसा क्यों हो रहा था? तुम्हें याद होगा कि वह खाल रुडोल्फ ने पहन ली थी और उसने यह इच्छा की थी कि वह कभी उसके शरीर से अलग न हो। इस तरह वह खाल उसके शरीर से चिपक गयी थी और इस प्रकार वह कभी न उतरने वाली खाल बन गयी थी।

और तुमको यह भी याद होगा कि खरगोश ने रुडोल्फ को इस खाल के बारे में यह भी बताया था कि उसकी एक इच्छा पूरी होने पर उस खाल का एक धागा टूट जायेगा और वह खाल उतनी ही छोटी हो जायेगी।

इसी लिये जैसे जैसे उनकी इच्छाएँ पूरी होती जा रही थीं वह खाल सिकुड़ती जा रही थी और उसके साथ साथ सिकुड़ रहा था रुडोल्फ।

बेचारा बूढ़ा रुडोल्फ। अब उसे यह सब बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था। अब उसकी इच्छा यह हो रही थी कि वह अब बड़ा हो जाये परन्तु वह यह इच्छा नहीं कर सकता था क्योंकि इससे

वह बड़ा होते होते फट भी सकता था। फिर वह खाल भी फट जाती और बेकार हो जाती।

लेकिन अब परेशानी यह थी कि उसकी पत्नी अभी भी सन्तुष्ट नहीं थी। आखिर उसकी पत्नी की इच्छा हुई कि वह रानी बने और उसका पति राजा और यह इच्छा करते ही तुरन्त ही वह एक बहुत बड़े महल में राज सिंहासन पर बैठी थी।

पर बेचारा रुडोल्फ, वह रानी के सामने बच्चे से भी छोटा लग रहा था। और वह धीरे धीरे इतना छोटा हो चुका था कि वह अब कुरसी पर बैठ कर नहीं बल्कि मेज के ऊपर बैठ कर खाना खाता था।

उसके लिये एक खास छोटा सिंहासन बनवाया गया जैसी कि किसी गुड़िया की कुरसी होती है और वैसी ही एक छोटी सी मेज। यह छोटी सी कुरसी और मेज खाने के बड़े कमरे में खाने की बड़ी मेज पर रखी जाती और वहीं राजा रुडोल्फ साहब अपना खाना खाते।

पर यह सब इतने बड़े राजा के लिये तो बहुत ही अपमानजनक था न। जो कोई भी उसको देखता हॅसे बिना न रहता। हालॉकि वे लोग अपने ऊपर काफी काबू करने की कोशिश करते पर फिर भी उस छोटे से राजा से वे खेले बिना न रह सकते जैसे वह कोई राजा न हो कर कोई खिलौना हो।

कुछ समय बाद एक इससे भी अधिक भयानक घटना घटी। रुडोल्फ की पत्नी अब उससे कतराने लगी थी क्योंकि उसे लोगों का अपने पति के ऊपर हॅसना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था।

उसने रुडोल्फ का मिलने जुलने वालों के सामने आना बन्द कर दिया। उसके लिये गुड़िया के घर जैसा एक छोटा घर बनवा दिया और उसे एक जगह पर रखवा दिया। और अब वह रुडोल्फ से उसी समय मिलने जाती थी जब उसको उससे अपनी कोई इच्छा पूरी करवानी होती थी।

अब तुम सोच सकते हो कि रुडोल्फ बेचारा कितना अकेलापन महसूस करता होगा। वह रोज सुबह उठता, अपना ताज पहनता और खिड़की में बैठ कर बाहर देखता रहता।

उसे आश्चर्य होता कि वह कितना छोटा हो गया है। फिर डरता कि इस तरह छोटा होते होते एक दिन वह कहीं गायब ही न हो जाये।

एक दिन वह अपनी खिड़की में बैठा बाहर झॉक रहा था कि उसने देखा कि एक लकड़हारा उधर से जा रहा था। उसके एक हाथ में कुल्हाड़ी थी और दूसरे हाथ से वह सिर पर रखा लकड़ी का गट्ठर सॅभाले था। वह मस्ती में गुनगुनाता चला जा रहा था।

रुडोल्फ ने उसे देख कर एक आह भरी और कहा — "ओह, मुझे इस आदमी से कितनी ईर्ष्या हो रही है। मेरी भी इच्छा है कि मैं भी यह सब भूल कर जंगल में अपनी पत्नी के साथ अपनी झोंपड़ी में रहूँ।"

बस, उसके इतना कहते ही यकायक एक ठंडी हवा का झोंका आया और रुडोल्फ ने देखा कि वह जंगल में लकड़ी का गट्ठर उठा रहा था और उसकी पत्नी झोंपड़ी में झोंपड़ी गरम करने के लिये आग जला रही थी और डबल रोटी और शहद लिये उसके आने का इन्तजार कर रही थी।

अब वह खुश था।

6 बतख लड़की[8]

एक बार की बात है कि एक विधवा रानी थी। उसके पति को मरे हुए काफी दिन बीत गये थे। उसके एक बेटी थी जिसकी शादी दूर देश के एक राजकुमार से पक्की हो चुकी थी।

जब उसकी शादी का समय आया तो उसने अपनी बेटी को उस राजकुमार के पास भेजा।

उसने अपनी बेटी के साथ बहुत सारे सोने और चॉदी के बरतन, सोने और चॉदी की और बहुत सारी छोटी छोटी चीज़ें, प्याले और जवाहरात आदि यानी जो भी शाही दहेज में देने के लायक चीज़ें थीं सब बॉध दीं।

क्योंकि वह उसकी अकेली बेटी थी और वह उसको बहुत प्यार करती थी और उसको वह सब कुछ देना चाहती थी जो एक राजकुमारी को दिया जाना चाहिये था।

उसने अपनी बेटी के साथ एक दासी भी कर दी जो उसके साथ जाती। दोनों को एक एक घोड़ा दे दिया गया।

राजकुमारी के घोड़े का नाम फ़ालाडा था। वह एक जादुई घोड़ा था क्योंकि वह बोल सकता था। जब बेटी के जाने का समय आया

[8] The Goose Girl – a fairy tale from Germany, Europe. Written by Jacob and Wilhelm Grimm in Brothers Grimms' book – "Children's and Household Tales – Grimms' Fairy Tales".
This story is taken from http://www.pitt.edu/~dash/grimm089.html
The story was first translated into English by Edgar Taylor in 1826, then by many others.
Andrew Lang included it in his "The Blue Fairy Book" in 1889.

तो रानी अपने सोने के कमरे में गयी और उसने चाकू से अपनी उँगलियाँ काटीं।

जब उनमें से खून निकलने लगा तो उसने एक सफेद कपड़ा लिया और उसमें उस खून की तीन बूँद इकट्ठा की और अपनी बेटी को दे कर कहा "तुम इनका खास ख्याल रखना बेटी। रास्ते में ये तुम्हारे काम आयेंगी।"

लड़की ने वह कपड़ा अपने गले के पास अपने ब्लाउज़ में रख लिया। दोनों ने दुखी मन से एक दूसरे से विदा ली। फिर वह अपने घोड़े पर चढ़ी और अपनी दासी के साथ अपने पति के घर चल दी।

कुछ समय के सफर के बाद राजकुमारी को बहुत तेज़ प्यास लगी तो उसने अपनी दासी से कहा — "तुम घोड़े से उतरो और मेरे लिये जो प्याला तुम अपने साथ लायी हो उसमें मेरे लिये झरने से पानी ला दो। मुझे बहुत प्यास लगी है।"

दासी बोली — "अगर तुमको पानी चाहिये तो अपने आप झरने के पास जाओ और वहाँ लेट कर पानी पी आओ। मुझे अब आगे से तुम्हारी नौकरानी नहीं रहना।"

राजकुमारी कुछ नहीं बोली। वह अपने घोड़े से नीचे उतरी और पास के झरने पर गयी और खुद ही जा कर वहाँ पानी के ऊपर झुकी और पानी पिया।

वह अपने सोने के प्याले से पानी नहीं पी पायी क्योंकि उसकी दासी ने वह उसको दिया ही नहीं। अपनी यह हालत देख कर वह बहुत धीरे से बोली — "हे भगवान आगे मेरा क्या होगा।"

उसकी वे तीन खून की बूँदें बोलीं — "अफसोस, अगर तुम्हारी माँ को इस बात का पता चलता तो उसके दिल के तो दो टुकड़े हो जाते।" पर राजकुमारी बहुत ही नम्र थी सो वह कुछ नहीं बोली और चुपचाप वहाँ से आ कर अपने घोड़े पर चढ़ गयी।

वे लोग कुछ देर और चले। दिन बहुत गरम था सो कुछ दूर और चलने के बाद राजकुमारी को फिर से प्यास लग आयी। उसने फिर से अपनी नौकरानी को अपने लिये पानी लाने के लिये कहा। मगर उस नौकरानी ने फिर से उसको वही जवाब दिया कि वह अब उसकी नौकरानी नहीं है। वह जा कर अपने आप पानी पी ले।

राजकुमारी बेचारी फिर अपने घोड़े पर से उतरी, पानी के पास गयी और उस बहते पानी के ऊपर झुक कर रो पड़ी और बोली — "हे भगवान, आगे मेरा क्या होगा।"

उसकी वे तीन खून की बूँदें फिर वही बोलीं — "अफसोस, अगर तुम्हारी माँ को इस बात का पता चलता तो उसके दिल के तो दो टुकड़े हो जाते।"

इस बार जब राजकुमारी पानी पीने के लिये नदी के ऊपर झुकी तो उसके ब्लाउज़ में से उसका वह खून की बूँदों का कपड़ा नदी में

गिर गया और बह गया। राजकुमारी को इस बात का पता ही नहीं चला।

पर राजकुमारी की दासी ने यह सब देख लिया। उसने जान लिया कि अब वह राजकुमारी पर हुकुम चला सकती थी। क्योंकि राजकुमारी की अब ताकत कम हो गयी थी और वह अब कमजोर भी हो गयी थी।

उसने इस मौके का फायदा उठाया। जब राजकुमारी वापस आ कर अपने घोड़े पर चढ़ने लगी तो उसने राजकुमारी से कहा — "वह घोड़ा तो मेरा है और यह घोड़ा तुम्हारा है। तुम इस घोड़े पर बैठो और मैं तुम्हारे वाले घोड़े पर बैठूँगी।" राजकुमारी को उसकी बात माननी पड़ी।

फिर दासी ने उससे उसके शाही कपड़े भी उतरवा लिये और अपने पुराने कपड़े उसको पहनने के लिये दे दिये।

उसके बाद दासी ने उसे इस बात की कसम खाने के लिये भी कहा कि अगर उसने इस सब के बदलने के बारे में उसने किसी से कुछ भी कहा तो वह उसको मार देगी। बेचारी राजकुमारी को यह कसम भी खानी पड़ी।

राजकुमारी का फ़ालाडा घोड़ा यह सब देख रहा था उसने सब बातें याद कर लीं।

अब वह दासी राजकुमारी के कपड़े पहन कर उसी के घोड़े फ़ालाडा पर बैठ कर चल दी जबकि राजकुमारी अपनी दासी के

कपड़े पहन कर उस दासी के घोड़े पर बैठ कर उसके पीछे पीछे चलती रही।

आखिर वे दोनों राजकुमार के महल में आयीं तो वह दासी तो ऐसी दिखायी दे रही थी जैसे कि वह उसकी मॅगेतर राजकुमारी हो और पीछे आती हुई राजकुमारी ऐसी लग रही थी जैसे उसकी दासी हो।

राजकुमार उनको बाहर लेने के लिये आया तो उसने यह सोचते हुए नकली राजकुमारी को घोड़े पर से उतारा कि वही उसकी दुलहिन थी। राजकुमार उसको ऊपर महल में ले गया और उस दासी को नीचे ही छोड़ गया।

उधर राजा ने ऊपर खिड़की से देखा तो एक लड़की को नीचे खड़े इन्तजार करते पाया। उसने देखा कि वह लड़की तो बहुत सुन्दर और बहुत ही कोमल थी। सो वह उसको शाही महल में गया और राजकुमार की पत्नी से उस लड़की के बारे में पूछा जो ऑगन में खड़ी थी कि वह कौन थी।

नकली राजकुमारी ने कहा कि उसने उसको साथ के लिये रास्ते से ले लिया था और उसको कुछ काम दे दिया था ताकि वह खाली न बैठी रहे।

पर राजा के पास तो उसको देने के लिये कोई काम नहीं था और उसको पता भी नहीं था कि वह क्या कहे सिवाय इसके "मेरे पास एक लड़का है जो हमारी बतखों की देखभाल करता है।

उस लड़के का नाम कौनरैड[9] है। यह लड़की उस लड़के की बतखों की देखभाल करने में सहायता कर दिया करेगी।"

राजा के जाने के तुरन्त बाद नकली राजकुमारी अपने होने वाले पति से बोली — "प्रिय, तुम मेरा एक काम कर दो।"

राजकुमार बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। बोलो मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ?"

नकली राजकुमारी बोली — "अभी मैं जिस घोड़े पर चढ़ कर आयी हूँ किसी को बुला कर उसका सिर कटवा दो क्योंकि उसने मुझे रास्ते में बहुत तंग किया था।"

तो ऐसा हुआ कि फ़ालाडा बेचारे को तो मरना ही पड़ा। असली राजकुमारी ने जब यह सुना तो उसने घोड़े को मारने वाले से प्रार्थना की कि वह उसको सोने का एक सिक्का देगी अगर वह उसका एक छोटा सा काम कर दे।

शहर में एक बड़ा सा दरवाजा था जिसमें से हो कर वह रोज सुबह शाम अपनी बतखों को ले कर जाया करती थी। अच्छा होगा अगर वह फ़ालाडा का सिर उस दरवाजे के नीचे टॉग दे। घोड़े मारने वाले ने ऐसा ही किया। उसने फ़ालाडा का सिर उस बड़े दरवाजे के नीचे कील से कस कर ठोक दिया।

[9] Conrad – name of the boy who took care of the King's ducks

अगले दिन जब राजकुमारी कौनरैड के साथ उस दरवाजे में से बाहर निकली तो उसने फ़ालाडा के सिर से कहा — "फ़ालाडा तुम तो मर गये और मेरी ज़िन्दगी की सारी खुशियॉ चली गयीं।"

फ़ालाडा बोला — "अफसोस ओ जाती हुई रानी, अगर तुम्हारी मॉ को पता चलता तो तुम्हारी मॉ के दिल के दो टुकड़े हो जाते।"

बतखों को मैदान में छोड़ कर राजकुमारी अपने बालों में कंघी करने बैठ गयी। उसके बाल असली सोने के थे।

उधर जब बतखें मैदान में घूम रहीं थी तो कौनरैड ने देखा कि राजकुमारी अपने बालों में कंघी कर रही थी तो उसको लालच हो आया कि वह उसके सुनहरी बालों में से कुछ बाल ले ले।

पर राजकुमारी ने यह भॉप लिया तो उसने जादू के कुछ शब्द बोले — "बहो हवा बहो। मैं कहती हूॅ कि कौनरैड का टोप उड़ा कर ले जाओ ताकि वह उसका तब तक पीछा करता रहे जब तक मैं कंघी करके अपने बाल बॉधती हूॅ।"

उसके यह कहते ही हवा का एक इतने ज़ोर का झोंका आया कि वह कौनरैड का टोप उड़ा कर ले गया और उसका टोप मैदान के उस पार उड़ता ही चला गया। कौनरैड को उसको लेने के लिये उसके पीछे भागना पड़ा।

जब वह अपना टोप ले कर वापस आया तब तक राजकुमारी अपने बालों में कंघी करके अपने बाल बॉध चुकी थी। अब तो कौनरैड उसका एक बाल भी नहीं ले सकता था।

यह देख कर कौनरैड को बहुत गुस्सा आया। वह उससे बोला भी नहीं। वे शाम तक इसी तरह से बिना बोले बतखों की देखभाल करते रहे और फिर घर चले गये।

अगली सुबह जब वे अपने बतखें फिर से उस दरवाजे से ले कर बाहर जा रहे थे तो राजकुमारी फिर बोली — "फ़ालाडा तुम तो मर गये और मेरी ज़िन्दगी की सारी खुशियॉ चली गयीं।"

फ़ालाडा बोला — "अफसोस ओ जाती हुई रानी, अगर तुम्हारी मॉ को पता चलता तो तुम्हारी मॉ के दिल के दो टुकड़े हो जाते।"

बतखों को मैदान में छोड़ कर राजकुमारी फिर अपने बालों में कंघी करने बैठ गयी। कौनरैड ने देखा कि राजकुमारी अपने बालों में कंघी कर रही थी तो उसको फिर से लालच हो आया कि वह उस के सुनहरी बालों में से कुछ बाल ले ले।

पर राजकुमारी ने यह फिर से भॉप लिया तो उसने फिर वही जादू के शब्द बोले — "बहो हवा बहो। मैं कहती हूॅ कि कौनरैड का टोप उड़ा कर ले जाओ ताकि वह उसका तब तक पीछा करता रहे जब तक मैं कंघी करके अपने बाल बॉधती हूॅ।"

उसके यह कहते ही हवा का एक इतने ज़ोर का झोंका आया कि वह कौनरैड का टोप उड़ा कर ले गया और उसका टोप मैदान के उस पार उड़ता ही चला गया। कौनरैड को उसको लेने के लिये फिर से उसके पीछे भागना पड़ा।

जब तक वह अपना टोप ले कर वापस आया तब तक राजकुमारी अपने बालों में कंघी करके अपने बाल बॉध चुकी थी। अब तो कौनरैड उसका एक बाल भी नहीं ले सकता था।

यह देख कर कौनरैड को फिर बहुत गुस्सा आया। वह उससे फिर नहीं बोला। वे शाम तक फिर पिछले दिन की तरह बिना बोले बतखों की देखभाल करते रहे और फिर घर चले गये।

उस शाम घर लौटने के बाद कौनरैड राजा के पास गया और उससे कहा — "मैं अब उस लड़की के साथ बतखें ले कर नहीं जाऊँगा।"

राजा ने पूछा — "क्यों?"

"क्योंकि वह मुझे सारे दिन गुस्सा दिलाती रहती है।"

राजा ने फिर पूछा — "पर यह तो बताओ कि हुआ क्या।"

कौनरैड बोला — "जब हम हम शहर के उस बड़े दरवाजे के नीचे से गुजरते हैं तो वहॉ एक घोड़े का सिर लगा हुआ है। वह रोज उससे कहती है - "फ़ालाडा तुम तो मर गये और मेरी ज़िन्दगी की सारी खुशियॉ चली गयीं।"

तो वह सिर बोलता है — "अफसोस ओ जाती हुई रानी, अगर तुम्हारी मॉ को पता चलता तो तुम्हारी मॉ के दिल के दो टुकड़े हो जाते।"

फिर कौनरैड ने राजा को मैदान का किस्सा भी बताया कि वहॉ क्या हुआ था। कैसे अचानक तेज़ हवा आयी और कैसे उसका टोप

उड़ा कर ले गयी और फिर कैसे उसे लेने के लिये उसको उसके पीछे भागना पड़ा।

यह सुन कर राजा ने कौनरैड को सलाह दी कि वह अगले दिन फिर से बतखों को ले कर मैदान जाये और वह इस मामले को खुद देखेगा।

अगले दिन सुबह होने से पहले ही राजा खुद उस बड़े दरवाजे के पीछे छिप कर बैठ गया और वहॉ उसने उस लड़की को फ़ालाडा के सिर से वही बात करते सुना जो कौनरैड ने उसे बतायी थी।

फिर उसने उस लड़की का मैदान तक पीछा किया और उसको देखने के लिये एक घनी झाड़ी के पीछे छिप कर बैठ गया। जल्दी ही वह लड़की और कौनरैड वहॉ अपनी बतखें लिये आ पहुॅचे।

बतखों को मैदान में छोड़ कर वह लड़की फिर से अपने बालों में कंघी करने बैठ गयी। राजा ने देखा कि उसके बाल सोने की तरह चमक रहे थे।

जल्दी ही उस लड़की ने गाना शुरू किया – "बहो हवा बहो। मैं कहती हूॅ कि कौनरैड का टोप उड़ा कर ले जाओ ताकि वह उसका तब तक पीछा करता रहे जब तक मैं कंघी करके अपने बाल बॉधती हूॅ।"

उसके यह कहते ही हवा का एक इतने ज़ोर का झोंका आया कि वह कौनरैड का टोप उड़ा कर ले गया और उसका टोप मैदान

के उस पार उड़ता ही चला गया। कौनरैड को उसको लेने के लिये उसके पीछे भागना ही पड़ा।

जब तक वह अपना टोप ले कर वापस आया तब तक राजकुमारी अपने बालों में कंघी करके अपने बाल बॉध चुकी थी।

इस तरह जो कुछ कौनरैड ने कहा था वह सब राजा ने अपनी ऑखों से देखा। यह सब देख कर राजा वहॉ से चुपचाप चला आया। किसी को पता नहीं चला कि राजा वहॉ आया था।

शाम को जब वह लड़की और कौनरैड घर वापस आ गये तो राजा ने उस लड़की को अपने पास बुलाया और उससे पूछा कि वह यह सब क्यों कर रही थी।

राजकुमारी बोली — "मैं यह आपको नहीं बता सकती और न ही मैं अपना दुख किसी दूसरे आदमी को बता सकती हूँ। क्योंकि मैंने खुले आसमान के नीचे इस बात की कसम खायी है कि मैं यह बात किसी को नहीं बताऊँगी। और अगर मैंने किसी को बताया तो मुझे मार दिया जायेगा।"

राजा उससे बार बार यह बताने की जिद करता रहा कि वह उसे यह बात बता दे पर वह उससे कुछ भी न कहलवा सका। आखिर वह बोला — "अगर तुम किसी आदमी को नहीं बता सकतीं तो यह लोहे की ऑगीठी रखी है तुम इसको बता दो।" यह कह कर राजा वहॉ से चला गया।

सो वह उस लोहे की अँगीठी के पास खिसक गयी और बड़े दुख से रोते हुए अपना दिल खोल कर बोली — "मैं यहाँ बैठी हुई हूँ, अकेली, मुझे दुनियाँ ने छोड़ दिया है।

हालाँकि मैं एक राजा की बेटी हूँ पर मेरी दासी ने मेरे शाही कपड़े ले लिये हैं और उसने मेरे दुलहे के साथ मेरी जगह भी ले ली है। अब मुझे एक बहुत ही मामूली बतख लड़की वाला काम करना पड़ता है। अगर मेरी माँ को यह पता चल जाये तो उसके दिल के तो दो टुकड़े हो जायेंगे।"

राजा बाहर अँगीठी के पाइप के पास खड़ा यह सब सुन रहा था। जब वह यह सब कह चुकी तो वह अन्दर आया और उसको अँगीठी से बाहर निकल आने को कहा। उसने उसको शाही कपड़े पहनाये तो राजा ने देखा कि वह कितनी सुन्दर थी।

राजा ने अपने बेटे को बुलाया और उसको बताया कि उसके पास तो नकली राजकुमारी थी जो केवल एक दासी थी। असली राजकुमारी जो उसकी दुलहिन थी वह तो राजा के पास खड़ी थी जो उनकी बतख लड़की थी।

राजकुमार ने जब अपनी असली दुलहिन को देखा तो वह बहुत खुश हुआ। उसने तुरन्त ही एक बड़ी दावत का इन्तजाम किया जिसमें उसने अपने सारे रिश्तेदारों और दोस्तों को बुलाया।

खाने की मेज पर जहाँ राजकुमार बैठा वहाँ उसके एक तरफ राजकुमारी बैठी और दूसरी तरफ दासी बैठी।

उन लोगों ने दासी को धोखा दे कर राजकुमारी को इस तरह तैयार किया कि वह राजकुमारी को पहचान ही न सकी।

जब वे सब खा पी चुके और अच्छे मूड में थे तो राजा ने दासी से एक पहेली पूछी — "उसको क्या सजा मिलनी चाहिये जिसने अपने मालिक को इन हालात में धोखा दिया हो?"

और यह कह कर उसने सारा हाल बता दिया और फिर पूछा — "अब बताओ ऐसे आदमी को क्या सजा मिलनी चाहिये?"

नकली दुलहिन ने कहा — "उसकी तो यही सजा है कि उसको नंगा करके एक ऐसे बैरल में रख देना चाहिये जिसमें चारों तरफ कीलें लगीं हों। उसमें दो सफेद घोड़े बॉध देने चाहिये जो उस बैरल को एक सड़क से दूसरी सड़क पर तब तक घसीटते रहें जब तक कि वह मर न जाये।"

राजा बोला — "तुम ही वह अपने मालिक को धोखा देने वाली हो। अच्छा हुआ तुमने अपनी सजा अपने आप ही सुना दी सो तुम्हारे साथ ऐसा ही बरताव किया जायेगा।"

सो उसके साथ ऐसा ही किया गया। इसके बाद राजकुमार की शादी राजकुमारी के साथ धूम धाम से कर दी गयी और दोनों ने बहुत सालों तक खुशी खुशी शान्ति से राज किया।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**1**
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**2**
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
4 रैवन की लोक कथाऐं–**1**

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — **10** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — **45** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–**1** — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2** — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं**–2**
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं**–3**
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं**–4**
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं**–5**
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं**–6**
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं**–7**
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं**–8**
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं**–9**
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं**–10**
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**